जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

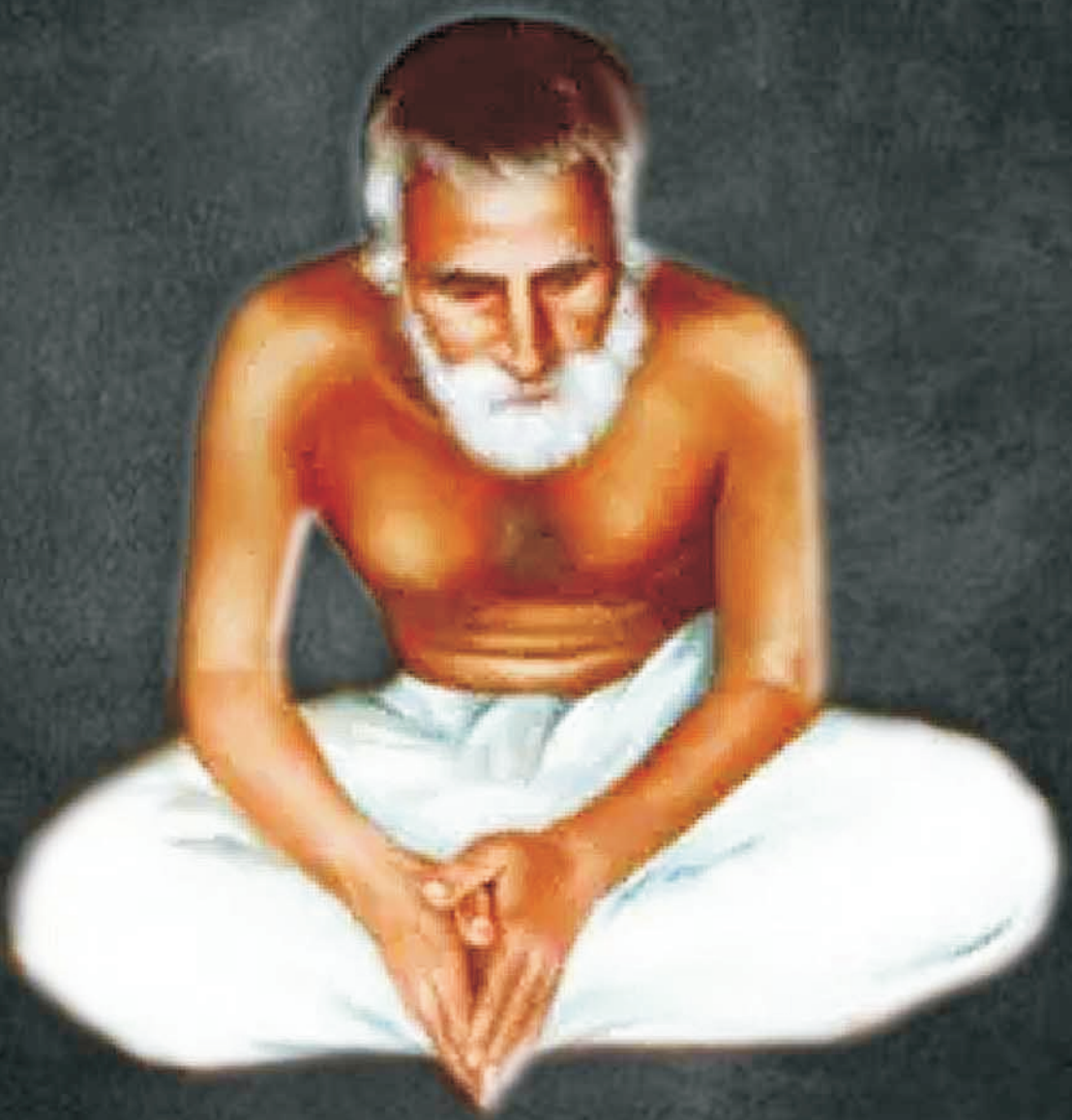

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर

अर्थलाभ-इसी आशा में

श्री श्रीगुरु-गौरांगौ जयतः

एक दिन कुलिया नवद्वीप के ***गोस्वामी नामक कई वैष्णव वेषधारी व्यक्तियों को साथ लेकर श्रील बाबाजी महाराज के पास आकर कहने लगे– "बाबा कई दिनों तक आपका दर्शन नहीं कर पाया, मैं परदेस गया हुआ था।" श्रील बाबाजी महाराज कहने लगे– "आपको नवद्वीप में भजन

करने के लिए घर और पक्का शौचालय मिल गया है। यहाँ पर आपका बाहर जाने का कष्ट दूर हो गया है। फिर क्यों आप व्यर्थ दूसरे स्थानों पर जाते हैं? तब गोस्वामी के संगी-साथी एक व्यक्ति ने कहा– "प्रभु देश का उद्धार करने के लिए दूसरे देश में जाते हैं। प्रभु यदि अन्य देश में न जाएँ, तब अन्य देशों की क्या गति होगी?" यह सुनकर बाबाजी महाराज अत्यन्त विरक्ति के साथ कहने लगे– "यदि देश का उद्धार करना ही उद्देश्य है, तब साहेब के

सिरों {उस समय इंगलैण्ड के राजा के मस्तक के चित्र से युक्त रुपये} क्यों लाना? आपने जो मन में सोचा हुआ है, उसे मैं जानता हूँ। आपकी यहाँ एक अच्छा सा मकान बनाने की इच्छा है। आप यदि सत्य सत्य हरिभजन करें और स्वयं 'प्रभु' हो गया हूँ– ऐसा नहीं सोचें तब मैं श्रीनित्यानन्द प्रभु को कह दूँगा– आपके 50 मकान होंगे। और यदि आप मकान बनाकर पुत्र कन्या का भोग का स्थान बढ़ाना चाहते हैं, तब निताई आपको यह सब जागतिक वस्तु दान कर कृष्ण

से वंचित कर देंगे। लाभ-पूजा -प्रतिष्ठा के उद्देश्य से जगत-उद्धार का ढोंग करने से जगत का उद्धार होना तो दूर, आप स्वयं पतित हो जाएँगे, जगत की भी वंचना करेंगे।" यह कहकर श्रील बाबाजी महाराज ने स्वयं ही उच्च स्वर से कीर्तन करना आरम्भ कर दिया और सन्ध्या तक कीर्तन किया। बाबाजी महाराज ने प्रकाशित कर दिया कि नामापराध और सेवापराध के फल से धर्म, अर्थ और काम प्राप्त होता है। यही जीव का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। गुरु

व नित्यानन्द प्रभु कपटी व्यक्ति की अर्थ आदि के द्वारा वंचना करते हैं।

श्रीलगुरुदेव